आहार दान विधि

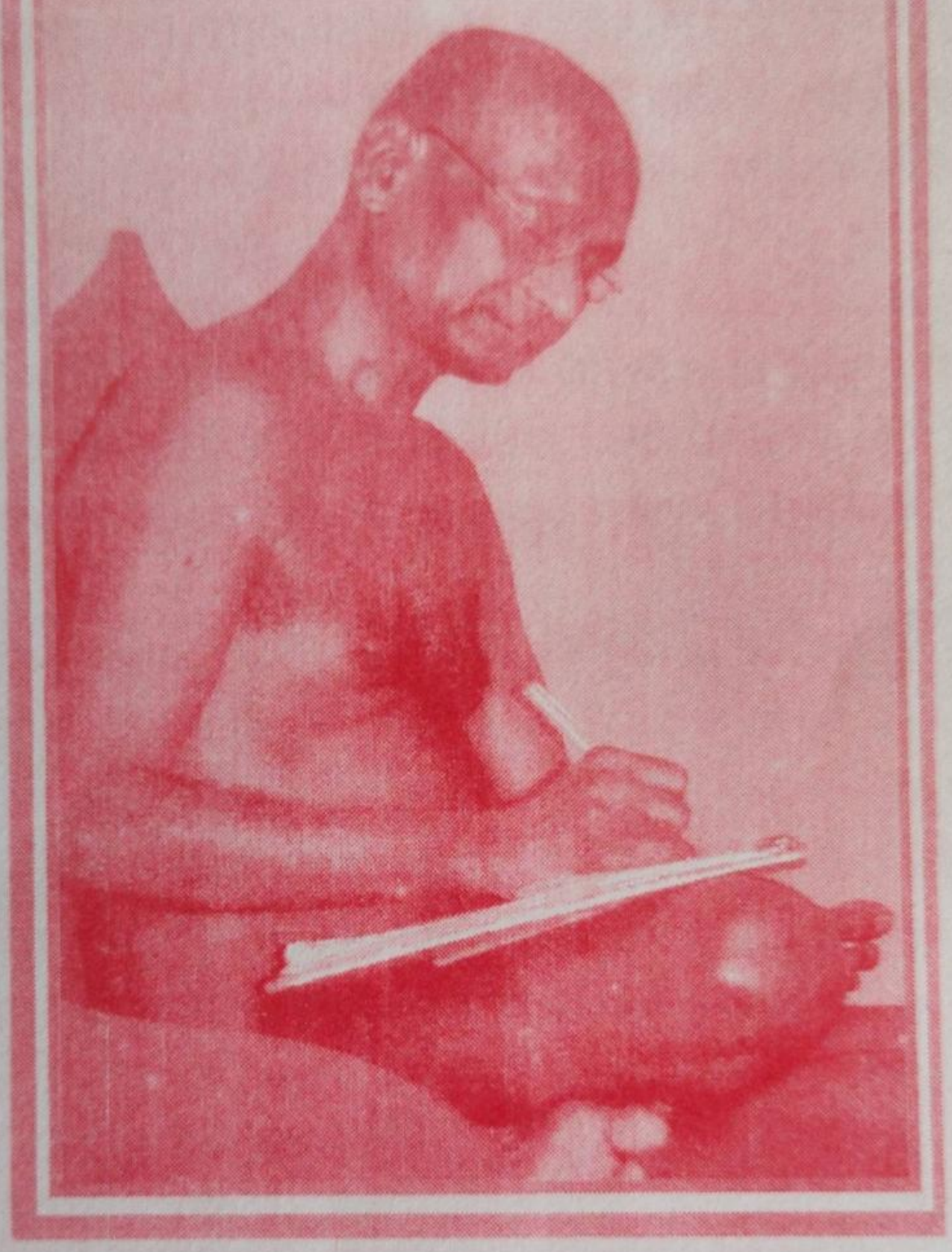

(लेखक - आचार्य कनकनन्दीजी गुरुदेव)

भेटकर्ता

छगनी बाई धर्म पत्नी मांगीलाल मादरेचा परिवार, सेमावाला
कैलाश देवी धर्म पत्नी अशोक कुमार सेठीया परिवार, सेमला वाला

Scanned by TapScanner

पड़गाहन –

1 मुनियों के लिए पड़गाहन विधि –

हे स्वामिन्! नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु, अत्र, अत्र, अत्र, तिष्ठ, तिष्ठ, तिष्ठ, आहार, जल, शुद्ध है।

2 आर्यिकाओं के लिए पड़गाहन विधि –

हे माता जी! वन्दामि, वन्दामि, वन्दामि, अत्र3 तिष्ठ3 आहार जल शुद्ध है।

3 क्षुल्लक, ऐलक के लिए पड़गाहन विधि –

हे महाराज जी। इच्छामि3 अत्र3 तिष्ठ आहार जल शुद्ध है।

"पड़गाहन के बाद शुद्धि"

जब मुनि गुरुदेव या साध्वी जी की विधि मिलने के बाद आपके सामने खड़े हो जाते हैं तो तीन प्रदक्षिणा देना। उसके बाद – **"नमोस्तु महाराज मनशुद्धि, वचनशुद्धि, काय शुद्धि, आहार जल शुद्ध है भोजनशाला में प्रवेश कीजिए"** कहना।

विशेष – साध्वी जी के लिए वन्दामि एवं क्षुल्लक जी के लिए इच्छामि कहे तथा क्षुल्लक व ऐलक जी के खड़े होने पर प्रदक्षिणा नहीं लगाये। ऐलक जी के लिए भी इच्छामि ही कहे। भोजन गृह में प्रवेश करने के लिए अनुरोध करे। पुनः– **"हे महाराज जी! नमोस्तु उच्च आसन पर विराजमान होइये" कहें।**

आसन पर विराजमान होने के बाद थालो में महाराज जी, माता जी तथा क्षुल्लक व ऐलक जी के पैर, गरम पानी में धोकर गन्धोदक सिर में लगावें।

पूजा - विधि

आह्वान – हे गुरुदेव (मुनिराज) अत्र अवतर, अत्र अवतर, तिष्ठ, तिष्ठ, तिष्ठ, मम सन्निहितो भव, भव, वषट् स्वाहा" ऐसा कहकर पुष्प क्षेपण करे।

1 जल – ऊँ ह्रीं श्री मुनिराज चरणेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामिति स्वाहा।

2 चन्दन – ऊँ ह्रीं श्री मुनिराज चरणेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामिति स्वाहा।

3 अक्षत – ऊँ ह्रीं श्री मुनिराज चरणेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

4 पुष्पं – ऊँ ह्रीं श्री मुनिराज चरणेभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

5 नैवेद्य – ऊँ ह्रीं श्री मुनिराज चरणेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य निर्वपामिति स्वाहा।

6 दीपं – ऊँ ह्रीं श्री मुनिराज चरणेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

7 धूपं – ऊँ ह्रींश्री मुनिराज चरणेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपानिति स्वाहा

8 फलं – ऊँ ह्रीं श्री मुनिराज चरणेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामिति स्वाहा

अर्घ्य – उदक चन्दन तन्दुल पुष्पकैः चरू सुदीप सुधूप फलार्घ्यकैः।
धवल मंगल गान रवाकुले मम गृहे मुनिराजमहं यजे।।

ऊँ ह्रीं श्री मुनिराज चरणेभ्योः अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं, निर्वपामिति स्वाहा।।

शान्ति धारा, परिपुष्पाञ्जलि क्षेपण करें एवं पंचांग नमोस्तु करे। पूजा के बाद थाली एवं कटोरी में रोटी, दाल आदि परोस कर पहले दिखाये।

"आहार देने के लिए शुद्धि"

हे स्वामिन्! नमोस्तु मन शुद्धि, वचन शुद्धि, कायशुद्धि पूर्वक आहार जल शुद्ध है अञ्जुली जोड़ कर मुद्रिका छोडकर भोजन ग्रहण कीजिए। फिर नमोस्तु करें। महाराज के मुद्रिका छोड़ने के बाद हाथ धुलावें।

भोजन विधि – महाराज जी के खड़े होकर मंत्र बोलने के बाद पहले पानी दें। पानी के बाद दूध दें। दूध के बाद भोजन दें। भोजन के मध्य–मध्य में थोड़ा–थोडा पानी भी दे। दूध के बाद खट्टी चीज एवं खट्टी चीज के बाद दूध नहीं दे। फल रस व फल के बाद पानी न दे पानी के बाद फल रस न दे।

चौका (भोजनशाला) शुद्धि – चौका प्रकाश युक्त हो, सुखा हो, जीवों से रहित हो, ऊपर स्वच्छ चंदोवा तना हो।

भोजन शुद्धि – कुआँ का पानी छानकर लाये। उसी समय छनने की जीवाणी को कुएं में डालें तथा उस छने जल को गरम करें तथा उससे भोजन बनावें। हाथ की चक्की से पीसा आटा, शुद्ध दूध, मर्यादित घी होना चाहिये।

"आहार देने वालों की शुद्धि"

स्नान करके शुद्ध कपड़ा पहन कर भोजन दे, तथा पुरुष जनेऊ धारण करें। लिपस्टिक, नेलपालिस, पाउडर न लगावे। आहार देते समय काला कपड़ा, लाल कपड़ा न पहने, रेशमी व गीला कपड़ा न पहने। गन्दा कपड़ा न पहने।

सप्त व्यसन का त्याग – आहार देने वालों को अण्डा, मांस, मद्य, धूम्रपान तम्बाकू आदि का जीवन पर्यन्त त्याग अनिवार्य है।

त्याग – आलू, लहसुन, मूली, गाजर, प्याज आदि जमींकन्द का तथा रात्रि

Scanned by TapScanner

भोजन, अशुद्ध भोजन, अशुद्ध पानी, होटल की चीजें, गोभी आदि का शक्ति के अनुसार त्याग करे। पानी छान कर पीवे, देव दर्शन नित्य करे, जनेऊ धारण करे।

'आहार दान का फल'

आत्म–विशुद्धि, धर्मप्रेम, गुरू–सेवा, लोभ की कमी, पाप–नाश पुण्य प्राप्ति यशप्राप्ति, अन्त में मोक्ष–प्राप्ति।

आहार की चीजों की मर्यादा

		वर्षा ऋतु	ग्रीष्म ऋतु	शीत ऋतु
1	दलिया, रवा, आटा, मैदा, मिर्च (मसाला) लाई आदि कुटे व गर्म किये।	3 दिन	5 दिन	7 दिन
2	मिठाई, खोवा, पेड़ा, बर्फी, लड्डू	1 दिन	1 दिन	1 दिन
3	बूरा, पतासा, बर्फी	6 दिन	15 दिन	30 दिन
4	पापड़, बड़ी, सेमियां, जलेबी पूरी, पराठा, हलुवा, शाक, सेव, बूँदी घी आदि से तले पदार्थ, आचार, मुरब्बा, दही, मठ्ठा।	12 घंटे	12 घंटे	12 घंटे
5	खिचडी, दाल, भात, कढ़ी, रोटी	6 घंटे	6 घंटे	6 घंटे
6	घी, तेल	1 वर्ष	1 वर्ष	1 वर्ष
7	सैंघा लवण (पिसा हुआ)	48 मिनट	48 मिनट	48 मिनट
8	(प्रसूत) बकरी भेड़ का दूध कब शुद्ध होता है?	8 दिन बाद	8 दिन बाद	8 दिन बाद
	(प्रसूत) भैंस का दूध कब शुद्ध होता है?	15 दिन बाद	15 दिन बाद	15 दिन बाद
	(प्रसूत) गाय का दूध कब शुद्ध होता है?	10 दिन	10 दिन	10 दिन

अन्तराय – केश (बाल), मरा हुआ जीव, सचित बीज, नाखून, चर्म, रक्त, मांस आहार में आने पर, मद्य, मांस देखने पर, शव देखने पर, दीपक (अग्नि) बुझने पर, जीव मरने पर, मांस भक्षी पशु–पक्षी मनुष्य रजस्वला स्त्री के छूने पर, बरतन गिरने पर, मनुष्य को चक्कर आ कर गिरने पर, त्यागी चीज एवम् अभक्ष्य भक्षण होने पर, अग्निदाह होने पर, करूण रोने की आवाज सुनने पर दूसरों को मारने पर, मार–काट आदि कठोर शब्द सुनने पर, पंचेन्द्रिय जीव – चूहा, बिल्ली आदि पैर के बीच से निकलने पर तथा और भी अनेक कारणों से अन्तराय हो जाता है।

Scanned by TapScanner